

---

shrIsubrahmaNyAkSharamAlikAstotram

श्रीसुब्रह्मण्याक्षरमालिकास्तोत्रम्

Document Information

---

Text title : subrahmaNyAkSharamAlikAstotram

File name : subrahmaNyAkSharamAlikAstotram.itx

Category : subrahmanya

Location : doc\_subrahmanya

Author : Nilakantha

Transliterated by : Sivakumar Thyagarajan Iyer

Proofread by : Sivakumar Thyagarajan Iyer, PSA Easwaran

Latest update : April 4, 2020

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

June 29, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

श्रीसुब्रह्मण्याक्षरमालिकास्तोत्रम्



ॐ श्रीगणेशाय नमः

शरवणामव गुड शरवणामव गुड

शरवणामव गुड पाळि गुरो गुड ॥

अभिलजगज्जनिपालननिलयन

कारण सत्सुभचिद्धन भो गुड (शर) ॥ १ ॥

आगमनिगदितमङ्गणगुणगण

आद्विपुरुषपुरुदूत सुपूजित (शर) ॥ २ ॥

धर्मवदनानुज शुभसमुद्ययुत

विभवकरम्भित विभुपदज्जम्भित (शर) ॥ ३ ॥

भीतिभयापल नीतिनयावल

गीतिकवाभिलरीतिविशारद (शर) ॥ ४ ॥

उपपतिरिव कृतवल्लीसङ्गम -

कुपित वनेयरपतिदृष्टयङ्गम (शर) ॥ ५ ॥

उज्जितशासनमार्जितभूषण

स्कूर्जयुधोषण धूर्जटितोषण (शर) ॥ ६ ॥

ऋषिगणविगणितयरणकमलयुत

ऋजुसरणियरित मलदवनमलित (शर) ॥ ७ ॥

ऋकाराक्षररूप पुरातन

राकायन्द्रनिकाश षडानन (शर) ॥ ८ ॥

लृकाररूपोपकारसुनिरत

विकाररलितापकारसुविरत (शर) ॥ ९ ॥

लृकाराकृति शोकापोलन

केकारवयुत केकिविनोदन (शर) ॥ १० ॥  
 ऐडकवाडन मूढविमोहन  
 ङाढसमभुवन सोढसद्करण (शर) ॥ ११ ॥  
 अलभिलादिदिगीशभलावृत  
 डैलासायललीलालस (शर) ॥ १२ ॥  
 ओजोरेजित तेजोराजित  
 आजिविराजदरात्यपराजित (शर) ॥ १३ ॥  
 औपनिषदपरमात्मपदोदित  
 औपाधिकविग्रहतामुपगत (शर) ॥ १४ ॥  
 अंडोनाशन रंडोगाडन  
 अडमोद्धोधन सिंडोन्नेषण (शर) ॥ १५ ॥  
 अस्तविशस्तसमस्तमडासुर  
 उस्तसततधृतशक्तिभृतामर (शर) ॥ १६ ॥  
 करुणाविग्रह कवितानुग्रह  
 कटुमतिदुर्ग्रह पटुयतिसुग्रह (शर) ॥ १७ ॥  
 भण्डितयण्डमडासुरमण्डल-  
 मण्डितनिभिडश्यामणकुन्तल (शर) ॥ १८ ॥  
 गङ्गासम्भव गिरिशतनूभव  
 रङ्गापुरोभव तुङ्गकुयाधव (शर) ॥ १९ ॥  
 धनवाडनमुभ सुरवरवन्दित  
 धननादोदित शिपिनटनन्दित (शर) ॥ २० ॥  
 डवमानधनुमौर्वीरवरत  
 पवमानधृतव्यजनकृतिमुदित (शर) ॥ २१ ॥  
 थरणायुध धर करुणा वृतिडर  
 तरुणा कृतिवर करुणासागर (शर) ॥ २२ ॥  
 छेदित तारक भेदित पातक  
 भेदित घातक वाञ्छित दायक (शर) ॥ २३ ॥

जलजनिभनयन फलमनुज मथन  
 बलिदनुजमदन कलिकलुषामन (शर) ॥ २४ ॥  
 ञषकेतनसम वृषकेतनरम  
 मिषयेतनयम वृषकारिसुगम (शर) ॥ २५ ॥  
 ज्ञातागमयय धृताघनियय  
 वीतषडरिरय गीतगुणोदय (शर) ॥ २६ ॥  
 टङ्गारागत कङ्गुतात्ताडित  
 ञङ्गाराढ्यालङ्गारावृत (शर) ॥ २७ ॥  
 डाकृतिराजित डाटककुण्डल  
 स्वाकृतिरेजित द्योटकमण्डल (शर) ॥ २८ ॥  
 डिम्भाकृतियुत रम्भानटरत  
 जम्भारिविनुत कुम्भोद्भवनुत (शर) ॥ २९ ॥  
 ढक्कारवकृत धिक्काराडित  
 दिक्कालामित डिक्कादिरडित (शर) ॥ ३० ॥  
 एकारतरुसुम निकाररतिदम  
 एकारयुतमनुजपविडितागम (शर) ॥ ३१ ॥  
 तापत्रयडर कालत्रययर  
 लोकत्रयधर वर्गत्रयकर (शर) ॥ ३२ ॥  
 स्थिरपददायक सुरवरनायक  
 निरसितसायक निरुपमगायक (शर) ॥ ३३ ॥  
 दान्तदयापर कान्तकणेभर  
 भ्रान्तं मां तर शान्तदुष्टयवर (शर) ॥ ३४ ॥  
 धीरोदात्त गुणोत्तरजित्वर ॥  
 धीरोपासित वित्तमडत्तर (शर) ॥ ३५ ॥  
 नववीराडित सवयोविडसित  
 भवरोगावृतमनुजजिडासित (शर) ॥ ३६ ॥  
 पुष्करमालावासितविग्रह

पुण्यपरायण विहितपरिग्रह (शर) ॥ ३७ ॥

द्वाललसन्मृगमदतिलकोज्ज्वल

कलिमलतूल सुवातूलातुल (शर) ॥ ३८ ॥

बन्दीकृतसुरवृन्दानन्दन

वन्दारु मनुज मन्दारद्रुम (शर) ॥ ३९ ॥

भवतागमितः कारागारं

प्राणवाविदितश्चतुरास्थोरम् (शर) ॥ ४० ॥

मडनीयमडावाक्योद्धोषित

कमनीयमडामकुटोद्भूषित (शर) ॥ ४१ ॥

योगिदृष्ट्य सरसीरुडभास्वर

योगाधीश्वर भोगविकस्वर (शर) ॥ ४२ ॥

रक्षोशिक्षाकृत्यविचक्षाण

रक्षाक्षकटाक्षनिरीक्षाण (शर) ॥ ४३ ॥

लोलदुकूलाञ्चलपादाञ्चल

बालकुतूडल वीलापेशल (शर) ॥ ४४ ॥

वलवैरिसुताचरितापडसित

लवलीतिमता भवतो वनिता (शर) ॥ ४५ ॥

शूलायुधधर कालायुतडर

मालायुतभर डेलायुतकर (शर) ॥ ४६ ॥

षट्कोणस्थित षट्तारकसुत

षड्भावरहित षडूर्मिघातक (शर) ॥ ४७ ॥

सुब्रह्मण्योमिति निगमान्तो

वदति भवन्तं प्राणपदार्थम् (शर) ॥ ४८ ॥

डारावणियुतकाराडृतसुर

धारारतडयनियुत नियुतरथ (शर) ॥ ४९ ॥

लणितकरकमल लुणितवरवलय

दणितासुरथय मिणितामरथय (शर) ॥ ५० ॥

क्षाराभङ्गुरजगद्गुपपादनयरा

वेदविनिश्चित तत्त्वजनावन (शर) ॥ ५१ ॥

नीलकण्ठकृतवर्णमालिका

प्रीतये भवतु पार्वतीभुवः ॥

एति नीलकण्ठकृता श्रीसुब्रह्मण्याक्षरमालिका समाप्ता ॥


Encoded by Sivakumar Thyagarajan

Proofread by Sivakumar Thyagarajan, PSA Easwaran

---

——  
*shrIsubrahmaNyAkSharamAlikAstotram*

pdf was typeset on June 29, 2023

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

